दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

पत्रांक : /2025–26 दिनांक : 06.11.2025

असतो मा सद्गमय का दृष्टिकोण विकसित करती है राष्ट्रीय शिक्षा नीति- डॉ रजनीश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लागू होने के साथ ही भारत के शैक्षिक परिदृश्य में एक गहन परिवर्तन की प्रक्रिया आरंभ हुई है। इस नीति ने शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता, समानता और सर्वांगीण विकास को केंद्र में रखकर शिक्षण की नई दिशा निर्धारित की है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रमुख उद्देश्य है। ऐसी शिक्षा व्यवस्था का निर्माण जो केवल परीक्षा-केंद्रित न होकर सीखने की गुणवत्ता. नवाचार. सृजनात्मकता और नैतिक मूल्यों पर आधारित हो। यह नीति बाल्यावस्था से लेकर उच्च शिक्षा तक एक सतत और समावेशी दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है।

उपर्युक्त बातें डॉ हरि सिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर मध्य प्रदेश से पधारे शिक्षाशास्त्र विभाग के सहायक आचार्य डॉ रजनीश अग्रहरि ने कही। वे दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा आयोजित विशिष्ट व्याख्यान में बतौर मुख्य अतिथि विद्यार्थियों को संबोधित कर रहे थे।

विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए उन्होंने आगे कहा कि गुणवत्तापरक शिक्षा के अंतर्गत नीति में शिक्षक प्रशिक्षणए मूल्यांकन प्रणाली में सुधार. स्थानीय भाषाओं के प्रयोग. तकनीकी सहायता से शिक्षण. और विद्यार्थियों की सोचने-समझने की क्षमता के विकास पर विशेष बल दिया गया है। प्राथमिक स्तर पर बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता' (Foundational Literacy and Numeracy) को आधार माना गया है। जिससे आगे की शिक्षा की गुणवत्ता को मजबूत किया जा सके। गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु शिक्षण में डिजिटल माध्यमों. प्रयोगात्मक अधिगम (experiential learning), और स्थानीय परिवेश से जुड़ी गतिविधियों को बढ़ावा दिया गया है। उच्च शिक्षा में ष्बहुविषयकता' (Multidisciplinary) और Academic Bank of Credit जैसी व्यवस्थाएँ विद्यार्थियों को अपनी रुचि के अनुसार अध्ययन की स्वतंत्रता प्रदान करती हैं। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि शिक्षा की गुणवत्ता तभी संभव है जब शिक्षक प्रशिक्षित. समर्पित और नवाचार के प्रति सजग हों।

विशिष्ट अतिथि के रूप में विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए डॉ अर्जुन सोनकर सहायक आचार्य दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर ने कहा कि इस नीति के तहत 5334 संरचना लागू की गई है। जो बच्चों के मनोवैज्ञानिक और विकासात्मक चरणों को ध्यान में रखकर बनाई गई है। इससे शिक्षा अधिक व्यावहारिकए आनंददायक और विद्यार्थी-केंद्रित बनती है।

विद्यार्थियों का संबोधित करते हुए विशिष्ट अतिथि डॉक्टर कृष्ण कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं. बल्कि विद्यार्थियों में मानवता. समावेशिता. पर्यावरण चेतना और वैश्विक दृष्टिकोण का विकास करना भी है। यही दृष्टिकोण गुणवत्तापरक शिक्षा की सच्ची पहचान है।

प्राचार्य डॉ. ओम प्रकाश सिंह ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में गुणवत्ता को केवल परिणामों से नहीं. बल्कि विद्यार्थियों की सोचए व्यवहार और सामाजिक सहभागिता से जोड़ा गया है। शैक्षणिक विशेषज्ञों का मानना है कि यदि इस नीति का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए तो भारत की शिक्षा प्रणाली न केवल रोजगारपरक बनेगी. बल्कि नैतिक. वैज्ञानिक और सृजनात्मक मूल्यों से युक्त वैश्विक नागरिक तैयार करेगी। गुणवत्तापरक दृष्टिकोण ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति की आत्मा है जो शिक्षा को मात्र डिग्री प्राप्ति का साधन न बनाकर जीवन निर्माण का माध्यम बनाने की दिशा में एक सशक्त कदम है।

कार्यक्रम का संचालन डॉ त्रिभुवन मिश्रा ने तथा आभार ज्ञापन शिक्षाशास्त्र विभाग की प्रभारी डॉ निधि राय ने किया। इस अवसर पर डॉ श्याम सिंह डॉक्टर अखंड प्रताप सिंह डॉ जागृति विश्वकर्मा डॉसुजीत कुमार शर्मा डॉ मुदित दुबे समेत सभी प्राध्यापक उपस्थित रहे।

डॉ. शैलेश कुमार सिंह
प्रभारी. सूचना एवं जनसम्पर्क